प्रवासी हिन्दी साहित्यकार सुषम बेदी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक सन्दर्भ

गायत्री देवी*

***शोध छात्रा, मा. गाँ. चि. ग्रा. विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना (म.प्र.), भारत**
Email: gayatree3587@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19463635
Received on: 03/02/2026 Accepted on: 26/03/2026 Published on: 08/04/2026

भारतीयों के पलायन एवं विदेश में प्रवास के दौरान मिली मुश्किलों व जीवन संघर्ष की गाथा को चित्रित करने वाली कृतियाँ प्रवासी साहित्य की श्रेणी में आती है| प्रवासी भारतीय जो अत्यधिक संवेदनशील होते थे, उन्होंने परदेश में प्रवास के दौरान आने वाली सामाजिक-सांस्कृतिक समस्यायों को या आस-पास घटित होने वाली घटनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्यिक कृतियों द्वारा उजागर करते हैं| प्रवासी साहित्य के बारे में सुधा ओम ढींगरा विचार - "प्रवासी साहित्य को पीड़ा व्यक्त करने वाला साहित्य मानती हैं|"१

प्रवासी साहित्य का अर्थ भारत से बाहर रह रहे भारतीय मूल के लेखकों द्वारा रचा गया हिंदी साहित्य है। यह साहित्य विस्थापन, पुरानी यादों (नॉस्टेल्जिया), सांस्कृतिक द्वंद्व और विदेशी धरती पर संघर्ष के अनुभवों को व्यक्त करता है। प्रवासी साहित्य के मुख्य बिंदुओं के अन्तर्गत वे रचनाकार भारतीय जो रोजी-रोटी या अन्य कारणों से विदेशों में बस गए हैं। इनका विषय अपनी जड़ों से बिछड़ने का दर्द, नई संस्कृति से तालमेल और पहचान का संकट है| यह हिंदी भाषा को वैश्विक पहचान दिलाने और भारतीय संस्कृति को संजोने का माध्यम है।

साहित्यकार वह व्यक्ति है जो अपने विचारों, अनुभवों और कल्पनाओं को शब्दबद्ध कर समाज के सामने रखता है। यह केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि जीवन के सत्य और मानवीय भावनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति है। साहित्यकार की परिभाषा को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

समाज का दर्पण, साहित्यकार समाज में घट रही घटनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से प्रतिबिंबित करता है और भावों के प्रकटीकरण के अन्तर्गत जो व्यक्ति गद्य (कहानी, उपन्यास) या पद्य (कविता) के माध्यम से पाठकों के मन में संवेदनाएँ जगा सके। साहित्यकार वह सृजनकर्ता है; जो अपनी मौलिकता और भाषा की कुशलता से नए संसार का सृजन करता है, जिससे समाज को दिशा मिलती है|

साहित्यकार की प्रमुख विशेषताएं जैसे संवेदनशीलता जिसमे एक साहित्यकार सामान्य घटनाओं में भी गहरा अर्थ ढूंढ लेता है। दूसरा उसका दृष्टिकोण जिसमे वह दुनिया को एक नए और आलोचनात्मक नजरिए से देखता है। वहीं लोक-कल्याण के अन्तर्गत उसका लेखन केवल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि मानवता के हित और मार्गदर्शन के लिए होता है।तभी तो मुंशी प्रेमचंद्र कहते हैं कि - "साहित्यकार वह है जो अपनी कलम से सोया हुआ समाज जगा दे।"२

प्रवासी साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध है, जो अपनी जड़ों से बिछड़ने के दर्द और नए परिवेश में सामंजस्य की जद्दोजहद से उपजी है। इसकी मुख्य धाराएँ ,पड़ाव और विकास गिरमिटिया काल से, इसकी शुरुआत 19वीं सदी में हुई जब भारतीयों को बंधुआ मजदूर बनाकर मॉरीशस, फिजी और सूरीनाम भेजा गया। यहाँ के साहित्य में श्रम, शोषण और देशप्रेम की पीड़ा प्रमुख थी। आधुनिक काल/20वीं सदी के उत्तरार्ध में बेहतर अवसरों की तलाश में लोग अमेरिका, यूके और कनाडा गए। यहाँ के साहित्य में अस्मिता का संकट (Identity Crisis) और 'ब्रेन ड्रेन' जैसे विषय प्रधान हैं।

द्वंद्व, अपनी मूल संस्कृति और विदेशी जीवनशैली के बीच का मानसिक संघर्ष। स्मृति और नॉस्टेल्जिया का अन्तर्गत बीती बातों और अपनी मिट्टी की यादों का भावुक चित्रण तथा प्रवासी लेखिकाओं ने परदेस में स्त्री की आजादी और अकेलेपन को प्रमुखता से लिखा है। मॉरीशस के अभिमन्यु अनत, यूके की सुषम बेदी, तेजेंद्र शर्मा अमेरिका के विभिन्न प्रवासी साहित्यकारों इस परम्परा के संवाहक बने|

सुषम बेदी हिंदी साहित्य की एक प्रमुख प्रवासी लेखिका, उपन्यासकार और शिक्षाविद् थीं। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था, जिसमें एक लेखक, अभिनेत्री और विद्वान का संगम देखने को मिलता है। यहाँ उनका जन्म 1 जुलाई 1945 को फिरोज़पुर, पंजाब (भारत) में। शिक्षा उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के इंद्रप्रस्थ कॉलेज से स्नातक (BA) और स्नातकोत्तर (MA) की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से "हिंदी नाटक: प्रयोग के संदर्भ में" विषय पर पीएच.डी. की उपाधि ली। उनका निधन 20 मार्च 2020 को न्यूयॉर्क, अमेरिका में हुआ|

सुषम बेदी का व्यक्तित्व उनकी बहुमुखी प्रतिभा के कारण विशिष्ट था| वे उन चुनिंदा लेखकों में से थीं जिन्होंने विदेश में रहते हुए भी अपनी मातृभाषा हिंदी को लेखन का माध्यम बनाया।

उन्होंने प्रवासी भारतीयों (विशेषकर अमेरिका में बसे भारतीयों) के आंतरिक संघर्ष, पहचान का संकट और सांस्कृतिक द्वंद्व को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से उभारा। लेखन के साथ-साथ उनका गहरा जुड़ाव अभिनय से भी था। 1960 और 70 के दशक में वे भारतीय टेलीविजन की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री और सलाहकार रहीं।

अमेरिका जाने के बाद भी वे रंगमंच और टीवी से जुड़ी रहीं। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क में हिंदी भाषा और साहित्य की प्रोफेसर के रूप में लंबे समय तक कार्य किया। उन्होंने कंप्यूटर के माध्यम से भाषा शिक्षण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ उनके साहित्य में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच झूलते जीवन का जीवंत चित्रण मिलता है। प्रवासी उपन्यासों में चित्रित **सामाजिक संदर्भ** मुख्य रूप से सांस्कृतिक द्वंद्व और पहचान के इर्द-गिर्द घूमते हैं। सुषम वेदी जैसे लेखकों ने विदेश में भारतीय परिवारों के सामने आने वाली सामाजिक चुनौतियों को गहराई से उकेरा है। इन उपन्यासों के प्रमुख सामाजिक पहलू निम्नलिखित हैं:

पीढ़ियों का अंतराल (Generation Gap): पहली पीढ़ी के प्रवासियों का अपनी जड़ों से जुड़ाव और दूसरी पीढ़ी का पूरी तरह पश्चिमी सांचे में ढलना आपसी तनाव पैदा करता है। अस्तित्व का संकट: विदेशी धरती पर 'पराया' समझे जाने का बोध और अपनी पहचान (Identity) को बनाए रखने का संघर्ष। स्त्री विमर्श: प्रवासी समाज में महिलाओं की दोहरी भूमिका—घर के भीतर भारतीय परंपराओं का निर्वहन और बाहर आधुनिक कार्यक्षेत्र में सामंजस्य। नस्लभेद और अलगाव: पश्चिमी समाज में स्वीकार्यता पाने की जद्दोजहद और कभी-कभी नस्लीय भेदभाव का सामना करना। बदले हुए पारिवारिक मूल्य: संयुक्त परिवार का टूटना और एकाकीपन (Loneliness) का सामाजिक संदर्भ इन उपन्यासों का केंद्र है।

सुषम बेदी के उपन्यास प्रवासी साहित्य (Diasporic Literature) के मील के पत्थर माने जाते हैं। उन्होंने न्यूयॉर्क और अमेरिका के अन्य हिस्सों में बसे भारतीय समुदाय के जीवन को बहुत करीब से देखा और उसे अपने उपन्यासों में उकेरा। उनके उपन्यासों में निहित सामाजिक संदर्भों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से विस्तार से समझा जा सकता है:

दो संस्कृतियों के बीच द्वंद्व (Cultural Conflict) सुषम बेदी के उपन्यासों का सबसे प्रमुख सामाजिक संदर्भ 'त्रिशंकु' की स्थिति है।

उनके पात्र न पूरी तरह से भारतीय रह पाते हैं और न ही पूरी तरह से अमेरिकी बन पाते हैं। 'हवन' उपन्यास में यह स्पष्ट दिखता है, जहाँ भारतीय संस्कार और विदेशी जीवन शैली के बीच टकराव होता है। उपन्यास यह सवाल उठाता है कि क्या भूगोल बदलने से संस्कार बदल जातें हैं? और प्रवासी समाज अपनी पहचान किस प्रकार सुरक्षित रख सकता है| यहाँ 'हवन' केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सांस्कृतिक शुद्धता को बचाए रखने का एक सामाजिक प्रयास है।

पीढ़ियों का अंतराल (Generation Gap) प्रवासी समाज में माता-पिता (पहली पीढ़ी) और बच्चों (दूसरी पीढ़ी) के बीच का वैचारिक अंतर एक गंभीर सामाजिक समस्या है। पहली पीढ़ी अपनी जड़ों, भाषा और धर्म से जुड़ी रहना चाहती है, जबकि दूसरी पीढ़ी अमेरिकी मूल्यों, स्वतंत्रता और डेटिंग संस्कृति को अपनाती है। सुषम बेदी ने दिखाया है कि कैसे यह अंतराल परिवारों के टूटने का कारण बनता है। इसका चित्रण 'कतरा-दर-कतरा उपन्यास' में किया है|

स्त्री अस्मिता और स्वतंत्रता (Women's Identity) सुषम बेदी की कृतियों में प्रवासी स्त्रियों की स्थिति का गहरा चित्रण है। उनके उपन्यासों में स्त्रियाँ केवल घरेलू काम तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहती हैं। 'लौटना' और 'कतरा-दर-कतरा' जैसे उपन्यासों में उन्होंने दिखाया है कि कैसे एक भारतीय स्त्री विदेशी धरती पर अपनी पहचान और अस्तित्व की लड़ाई लड़ती है। वह परंपराओं के बोझ और आधुनिकता की माँग के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करती है।

पहचान का संकट (Identity Crisis) सामाजिक स्तर पर 'नस्लभेद' (Racism) और 'अलगाव' (Marginalization) उनके पात्रों के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। जिसका चित्रण 'मैंने नाता तोडा', 'कतरा-दर-कतरा' उपन्यास में किया है| उनके पात्रों को अक्सर यह महसूस होता है कि कड़ी मेहनत और सफलता के बावजूद, गोरे समाज में उन्हें हमेशा एक 'बाहरी' (Outsider) के रूप में देखा जाता है। यह सामाजिक उपेक्षा उनके भीतर हीन भावना या विद्रोह पैदा करती है। इसमें यह सन्देश देती हैं कि कोई भी रिश्ता व्यक्ति की अपनी पहचान से बड़ा नहीं होता |

पारिवारिक विघटन और अकेलापन भारतीय समाज की धुरी 'संयुक्त परिवार' है, लेकिन विदेश में यह ढांचा बिखर जाता है।

सुषम बेदी ने अपने उपन्यासों में दिखाया है कि कैसे विदेशों में लोग बड़े घरों में रहने के बावजूद सामाजिक रूप से अकेले हैं। बुजुर्गों की उपेक्षा और बच्चों का अपने माता-पिता से भावनात्मक रूप से कट जाना एक कड़वा सामाजिक यथार्थ है।

भाषा और जड़ों की तलाश उनके उपन्यासों में हिंदी भाषा के प्रति मोह और बच्चों को अपनी भाषा न सिखा पाने का अपराध बोध भी एक सामाजिक संदर्भ के रूप में आता है। पात्र अपनी भाषा और खान-पान के माध्यम से भारत को अमेरिका में जीवंत रखना चाहते हैं।

विशिष्ट उपन्यासों के संक्षिप्त संदर्भ: **हवन:** परंपरा बनाम आधुनिकता और भारतीयता की रक्षा। **लौटना**: विस्थापन का दर्द और अपनी मिट्टी की ओर लौटने की छटपटाहट। **इतर:** यह उपन्यास जीवन के उन हिस्सों को छूता है जो मुख्यधारा से अलग रह जाते हैं। **गाथा अमरबेल की**: रिश्तों की उलझन और प्रवासी जीवन की जटिलता।

साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए साहित्य अकादमी (दिल्ली) द्वारा हिंदी सेवा के लिए सम्मान (2006)। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सम्मान। उनके पहले उपन्यास 'हवन' को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहना मिली और इसका कई भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। उपन्यास 'हवन' प्रवासी साहित्य की क्लासिक रचना मानी जाती है, जिसमें वे दिखाती हैं कि कैसे बाहरी दुनिया में तो व्यक्ति सफल हो जाता है, लेकिन आंतरिक रूप से अपनी जड़ों के लिए तरसता रहता है। सुषम बेदी प्रवासी हिंदी साहित्य का एक ऐसा स्तंभ हैं जिन्होंने सात समंदर पार बैठकर भी हिंदी की जड़ों को सींचने का काम किया। उनका लेखन केवल यादों का पिटारा नहीं है, बल्कि न्यूयॉर्क जैसे महानगरों में बसने वाले भारतीयों के मानसिक अंतर्द्वंद्व का एक जीवंत दस्तावेज़ है।

निष्कर्ष:

सुषम बेदी का साहित्य केवल कहानियों का संग्रह नहीं है, बल्कि वह उन विस्थापित मन की आवाज़ है जो दो संस्कृतियों के बीच अपनी जगह तलाश रहे हैं। सुषम बेदी के उपन्यासों का सामाजिक फलक अत्यंत विस्तृत है। उनके उपन्यास केवल कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि वे प्रवासी भारतीयों के समाजशास्त्रीय अध्ययन (Sociological Study) के दस्तावेज हैं, जो यह बताते हैं कि घर से दूर एक 'नया घर' बसाने की प्रक्रिया कितनी चुनौतीपूर्ण और दर्दनाक होती है|

सन्दर्भ:

- ढींगरा, सुधा ओम (2010). *प्रवासी साहित्य: दशा और दिशा*. आलोचनात्मक निबंध
- प्रेमचंद (1936). *साहित्य का उद्देश्य*.
- बेदी, सुषम (1989). *हवन*. पराग प्रकाशन.
- बेदी, सुषम (1992). *लौटना*. पराग प्रकाशन.
- बेदी, सुषम (1998). इतर. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
- बेदी, सुषम (1999). *गाथा अमरबेल की*. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
- बेदी, सुषम (2002). *नवाभूम की रसकथा*. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
- बेदी, सुषम (2006). *मोर्चे*. वाणी प्रकाशन.
- बेदी, सुषम (2009). *मैंने नाता तोड़ा*. भारतीय ज्ञानपीठ.
- बेदी, सुषम (2017). *पानी केरा बुदबुदा*. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.